१८५, सिविल लाइन्स
बरेली - 243001
7.11.81.

प्रिय भाई अरविन्द जी,

दिवाली बाद सिद्धार्थ ने आपकी पुस्तक खेल खेल में मुझे दी। आशा है दीपावली आपने भी सपरिवार हंसी खुशी मनाई होगी। मेरी शुभ कामनायें आपके साथ हैं।

'खेल खेल में' पुस्तक मुझे बहुत ही अच्छी लगी। इसे मैं बच्चों के लिए अत्यन्त उपयोगी और हर घर में जहां बच्चे हैं, एक अनिवार्य पुस्तक मान सकता हूं। बच्चों के विकास में यह बहुत सहायक हो सकती है। इसकी प्रस्तावना भी आपने बड़ी सुन्दर लिखी है। इसके लिए भी आपको बधाई।

यह पत्र दो आवश्यक कामों से भी आपको लिख रहा हूं। मैं इस पुस्तक का प्रत्येक पृष्ठ क्रमशः बाल पाठकों के लाभार्थ 'अमर उजाला' में प्रकाशित करना चाहता हूं। इसका कापी राइट यदि आपके ही पास हो तो आप इसकी अनुमति दे सकते हैं। इससे आपको कुछ अतिरिक्त लाभ भी हो सकता है। आप कहें तो इस संबंध में एक औपचारिक पत्र अमर उजाला से भी जा सकता हूं या आप मेरे ही नाम इस पत्र के उत्तर में अलग से एक औपचारिक पत्र भी लिख दें तो उससे भी काम चल सकता है।

दूसरी बात यह है कि मैंने उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान को बच्चों के लिए एक संपूर्ण ज्ञान कोष तैयार करके प्रकाशित करने के लिए मना लिया है। अब काम इसे तैयार करने का है जिसके लिए हर विषय के विद्वान संपादक चाहिए जो एक ओर आवश्यक ज्ञान का चयन करें तो दूसरी ओर बच्चों के स्वभाव का ध्यान करके उसे सरल भाषा में लिख भी दें। यदि चयन करने और लिखने वाले अलग अलग हों तो भी काम चल सकता है। मुख्य काम तो विभिन्न विषयों के अलग अलग संपादक छांटने का है। एक तो आप ही सकते हैं। डा. कृष्ण कुमार को भी मैं लिखूंगा। और देश भर में जो भी कहीं उपयुक्त व्यक्ति हों उनके नाम पते भी आप मेरे पास भेज दें। काम बहुत बड़ा है और समय भी बहुत लगेगा। कुछ चित्र आदि भी साथ देना होंगे। पर काम एक बार शुरु हो जाय तो फिर होता ही रहेगा और एक स्थायी महत्व का काम हो जायगा।

आप इन दोनों बातों का उत्तर मुझे यथाशीघ्र लिखें तो और आगे बढ़ा जाय।

अपनी पत्नी को मेरा नमस्कार और बच्चों को प्यार कहियेगा।

यहां पुनीत, सुषमा सहित सब ठीक हैं।

सस्नेह — निरंकारदेव सेवक